दैनिक
राष्ट्रीय प्रस्तावना
गाँव से गवर्नेन्स तक
लखनऊ, रायबरेली, इलाहाबाद, आजमगढ़, झांसी, एटा, औरैया, अमेठी, बलरामपुर, फतेहपुर, बांदा, उन्नाव, लखीमपुर, मुरादाबाद, कन्नौज, बाराबंकी, सीतापुर, जौनपुर, उरई, जालौन, फिरोजाबाद, हरदोई, मथुरा, कानपुर, ललितपुर, गोण्डा, सहारनपुर, सिद्धार्थनगर, सन्तकबीरनगर, लोयडा सहित प्रदेश के समस्त क्षेत्रों में बहुप्रसारित

पालीथीन के स्थान पर जूट के बैग का उपयोग पर्यावरण सुरक्षा मे मददगार

पर्यावरण के सुरक्षा मे घातक साबित हो रही पालीथीन के इस्तेमाल को रोकने के लिये विरामखड मे रह रहे प्रो0 भरत राज सिह, जो स्कूल ओफ मैंनेजमेंट साइंसेज, लखनऊ के महानिदेशक है, पिछले दस वर्षो से जागरूकता अभियान चला रहे है । इसके तहत वह लोगो को पालीथीन का उपयोग बंद करने और कपडे, जूट और कागज के थैले का इस्तेमाल करने के लिये प्रोत्साहित कर रहे है ।

डा0 भरत राज सिह, उत्तर-प्रदेश राजकीय निर्माण निगम से वर्ष 2004 मे प्रबंध-निदेशक के पद से सेवानिवृत होने के बाद प्रदूषण से पर्यावरण को बचाने का संकल्प लिया तथा जूट के बैग के उपयोग को बढावा देना शुरू किया । गोमतीनगर के विराम खंड-5 मे घर-घर जाकर जूट व कपडे के बैग बाटने लगे । कुछ दिनो मे उनके साथ कालोनीके दूसरे वुजुर्ग लोग भी इनके इस अभियान मे साइल हो गये । डा0 भरत सिह कहते है कि लखनऊ की आबादी लगभग 43 लाख है और करीब 25-30 करोड बैग का इस्तेमाल प्रतिमाह किया जा रहा है। इससे जमीन, पानीऔर हवा सब प्रदूषित होती है। इसका खामियाजा आनेवाली पीढी को उठाना पडेगा । डा0 सिह का कहना है कि पालीथीन सडको से नालो से जाता है, जो शहर का ड्रैनेज सिस्टेम चौपट करता है ।जानवर भी पालीथीन खा जाते है । इन सब कॉ रोकने के लिये ही उन्होने लोगो को धर-घर जाकर जूट व कपडे के थैले के फायदे बताने शुरू किए ।

वह लोगो को अपनी गाडी या स्कूटर मे हमेशा एक जूट या कपडे के बैग रखने और खाने-पीने की चीजो को कागज या पत्ते की प्लेटो मे लेनेके लिये जागरूक करते है । साथ ही वह लोगो को पालीथीन के उपयोग के खतरो के बारे मे जानकारी देते है । डा0 सिह ने बायोडिग्रेडेबल (स्वाभाविक तरीके से नष्ट होने वाला) कपास या जूट बैग के इस्तेमाल को बढावा दिया । उनका मानना है कि ऐसा करने से शहर मे आधे से ज्यादा कूडे का संकट समाप्त हो जायेगा ।

मौजूदा वक्त वह एस0एम0एस0 के छात्रो को प्रार्त्तिक संसाधनो से बने थैले का उपयोग करने की सलाह देते है । दुकानो पर जूट से बने बैग की संख्या बढाने के लिये इसका उत्पादन मे नई-नई डिजाइन की सलाह देते है और अपना पैसा भी लगाते है। कालोनी के लोग इनकी इस मुहिम मे बढ-चढकर भाग ले रहे है ।